ययाति : एक श्रेष्ठ साहित्यकृती

– सोमनाथ कोमरपंत

वि. स. खांडेकर मराठी साहित्यविश्व का एक मापदंड है। उन्होने अपने उपन्यासलेखन में निरंतर राष्ट्रीय स्पंदनशीलता, सामाजिक परिवर्तनशीलता, बुद्धिप्रमाण्यवाद और वाङमयीन वृत्तिप्रवृत्तियों का अपनी शक्ति के अनुसार बिंधने का प्रयास किया। उनके प्रतिभाधर्म में सामाजिक चिंतनशीलता प्रतिबिंबित हुई है। युगमानस के अनुसार साहित्यिकों ने समाज का ऋण चुकाना है इस उत्तरदायित्व का ध्यान रख के उन्हों ने नितान्त निष्ठा के साथ अक्षरसाधना की। नयी ऊर्मिओ से विवेकशील समाज का निर्माण करने की उन्होंने उपासना की। भौतिक स्मृद्धी की जगमगाहट में मानवतावादी मूल्यों का नंदादीप बुझने नही देना चाहिए, यह अंत:सुर उन्होने बार बार प्रकट किया। मानवी मूल्यों के झुलसने की प्रक्रिया में सर्जनशीलता की अमृतवेल उन्हों ने सूखने नहीं दी। कठोर वास्तव के अनुभूमि का स्पर्श उनके मनस्वी व्यक्तित्व को हुआ था। लेकिन जीवनश्रद्धा के उत्कट रंग देकर और नये सपनों के पंख प्रदान कर के खांडेकरजी ने बीसवीं सदी के पाँचवे दशक में मराठी जनमानस को संजीवक शक्ति दी। यह मन असल भारतीय था। इसी के कारण मराठी पाठकों के साथ साथ अन्य भाषिक भी उनके साहित्य के प्रति आकृष्ट हुए।

वि.स. खांडेकर ने अपना पहला उपन्यास 'हृदयाची हाक' १९३० में लिखा। अंतिम उपन्यास 'अमृतवेल' १९६७ में लिखा। १९५९ में प्रकाशित हुआ 'ययाति' उपन्यास उनके परिणतप्रज्ञ प्रतिभा का हृदयंगम आविष्कार है। इस में समकालीन समाज की जीवनशैली और सभ्यता पर उन्होंने विदारक भाष्य किया है। १९६० में 'ययाति' को साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ। १९७५ में उनको 'ययाति' के उपलक्ष्य में ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। मराठी का यह पहला पुरस्कार। बडी विनम्रता के साथ उन्हो ने इसको स्वीकार किया। इस समय के उनके उद्गार लक्षणीय हैं।

'... लेकिन वह मेरा व्यक्तिगत सम्मान नहीं है। सौंदर्य, सामर्थ्य और साधुत्व इन गुणविशेषों से संपन्न हुए मराठी सर्जनशील साहित्य के एक प्रतिनिधि होने के कारण वह मुझे प्राप्त हुआ है इस का मुझे पूर्ण आत्मभान है।''

खांडेकरजी के मनोभावों मे ययाति का अंत:सूत्र अधोरेखित हुआ है:

''विज्ञान और तंत्रज्ञान इन्हों ने भौतिक समृद्धि के द्वार खोल दिये हैं। लेकिन अन्य लोगों ने इस समृद्धि के भागीदार होने के लिए अपने हृदयद्वार मानव ने खुले किये हैं क्या? काम, क्रोध और लोभ ऐसे विध्वसंक मनोविकारों पर उसने अंशत: नियंत्रण रखा है क्या? जिस का हम उठते बैठते गौरव करते हैं वह आज की संस्कृती कितनी छिछली है इस पर सांप्रत सदी के दो प्रलयंकारी विश्वयुद्धों ने प्रकाश फ़ैलाया नहीं है क्या? ऐहिक सुखसाधन और विलासपूर्ण उपभोग ये कांचनमृग के पीछे दौड़नेवाले मानव को मनुज इन दो स्तरों पर जीनेवाला प्राणी है इस का विस्मरण हो चुका है। इस का पहला स्तर भौतिक या ऐहिक। दूसरा स्तर नैतिक या आत्मिक।''

मुख्यत: ययाति के स्मरणमालिका से खांडेकरजीने यह उपन्यास लिखने का प्रयास किया है। महाभारत के उपाख्यान का उन्होंने आधार लिया है। लेकिन खांडेकरजी की स्वतंत्र प्रज्ञा और प्रतिभा से यह नवनिर्मिति सांप्रत जीवनचिंतन के परिप्रेक्ष्य में और कलात्मक रुप में हमारे सामने आयी है। यह पढ़कर हमारे मानस में अंतर्मुखता का नया प्रवास शुरू होता है।

ययाति का अंतिम अवतरण यह है। ययाति पुरूषों को उपदेश करता है :

''सुख में, दुख में, हमेशा एक बात ध्यान में रख। काम और अर्थ ये महान पुरुषार्थ हैं। बड़े प्रेरक पुरुषार्थ हैं। जीवन को परिपोषक ऐसे पुरुषार्थ हैं। लेकिन ये स्वेच्छाहार से दौड़ने वाले पुरुषार्थ हैं। ये पुरुषार्थ कब अंधे होंगे इसका पता नहीं चलता। उनकी लगाम आठों प्रहर धर्म के काबू में रख।''

'ययाति' उपन्यास का यह अंत:सूत्र हैं :

न जातू काम, कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते।।

यह जीवनसूत्र समग्र उपन्यास में प्रवाही और प्रभावी ढंग से अधोरेखित हुआ है। इस का असर संवेदनशील पाठकों पर है। इस उपन्यास का लेखक आधुनिक काल में वास करनेवाला है। उस का दृष्टिकोण आधुनिक है। कथानक पौराणिक है। उपन्यास में पौराणिक वातावरणनिर्मिति है पूरी शक्ति के साथ हुई है। माहौल महाभारतीय है।

ययाति की स्मरणमालिका तटस्थ भाव से लेखक ने हमारे सामने पेश की है। उस में जीवन की कहानी है। ययाति के बचपन से वानप्रस्थाश्रम तक समग्र जीवन की क्रमिक कथा है। यह केवल आत्माविष्कार की प्रबल प्रेरणा से, कथा के घटकों के कार्यकारणभावों का बंधन तोड़ के, अंतर्मन का मंथन करनेवाली स्मृतियों से, संवेदनात्मक आघातों से अनावरत होकर आई हुई जीवन कहानी नहीं है। बल्कि मन की अवस्था में अलिप्त भाव से अपना जीवन बिंधनेवाली ययाति की यह कथा है। स्वाभाविकत: उस में नियोजन, गठन और आत्मभान के साथ घटनाओं का अन्वयार्थ लगाने का प्रयास किया है। मुख्यत: इस उपन्यास में ययाति का प्रथमपुरुषी एकवचनी निवेदन आता है। उसके साथ साथ देवयानी और शर्मिष्ठा ये पात्र भी निवेदन करते हैं। निवेदन- आत्मनिवेदन यह खांडेकरजी की एक प्रबल लेखन प्रवृत्ति है। इससे इस उपन्यास को गुणवत्ता प्राप्त हुई है। कोई मर्यादा भी पैदा हुई हैं।

इस उपन्यास में नहुष की मृत्यु के बाद ययाति राजा बन जाता है। कच और शुक्राचार्य इन दोनों में तप:सामर्थ्य के बारे में द्वंद्व चलता है। ययाति राज्यकारोबार में लापरवाही कर के भोगलंपट हो जाता है। 'ययाति' उपन्यास में बड़े पुरुवंश के सम्राट की जीवनकहानी है। फिर भी आखिर यह एक सम्राट की कहानी नहीं रहती। एक परिवार की कहानी हो जाती है। भोग के अतिरेक मार्ग पर जिस के जीवन का पतन हो चुका है इस प्रमादशील मानव की यह कथा है। देव-दानवों का वैरभाव, संघर्ष की प्रकांड घटना, कच और शुक्राचार्य के व्यतिरिक्त सिद्धिप्राप्त का महत्व ययाति के पारिवारिक जीवनसंदर्भ में गौण स्वरुप में आता है। खांडेकरजी का ययाति को राजा के रूप में अधोरेखन करने का इरादा नहीं है। भोग और त्याग के मूलभूत संघर्ष में फँसे हुए सर्वसामान्य आदमी के तौर पर ययाती को लेखकने हमारे सामने रखा है।

खांडेकरजी का इस उपन्यास मे अपने

जीवनविषयक तत्त्वज्ञान का मंडन करने का इरादा है। उन को एक उदात्त दृष्टिकोण समाज के सामने रखना है। हमेशा के लिऐ वह उन की जीवनधारणा है। उनके इस अनुभूती का प्रकटीकरण 'ययाति' में है। बीसवी सदी में सारी दुनिया सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में विनाश की खाई में खुद को खो बैठी है ऐसा प्रमेयात्मक सूत्र लेकर उन्हों ने ययाति की पौराणिक कथा चुनी है। हायड्रोजन बॉम्ब जैसे विनाशकारी अस्त्रों की, क्षेपणास्त्रों की मानव ने खोज की है। लेकिन वह अपने मन पर विजय पा न सका। इस उपन्यास में शीघ्रकोपी, संदसदविवेकबुद्धि का विस्मरण होनेवाला, छोटी फलप्राप्ति के लिये असीम सामर्थ्य का उपयोजन करनेवाला दैत्यगुरू शुक्राचार्य है। यह प्रमादी शक्ति का प्रतिक है। मानव के विनाशकारी शक्तियों का मुकाबला सर्वमंगलता के प्रति उन्मुख शक्तियों की साधना करने सेही हो सकती है ऐसा विश्वास खांडेकरजी के मन में है। इस लिऐ उन्होने कच की व्यक्तिरेखा हमारे सामने रखी हे। भोगवादी समाज का ययाती प्रतीक है। त्याग, मानवता की सेवा, उदात्त प्रेम, व्यक्तिगत सुखदुखों के पार जाकर समष्टी की सुखप्राप्त करनेवाले लोगों का कच प्रतीक है।

भोग और त्याग, काम और धर्म, शक्ति की उपासना और मंगल कामना, गृहस्थधर्म और संन्यासमार्ग इन में समन्वय प्रस्थापित करना और इस से जीवन में संतुलन निर्माण करना यही खांडेकरजी का ध्येय है। वे ध्येयपंथी लेखक है। कुछ समीक्षक यह उनकी मर्यादा समझते हैं। लेकिन यही खांडेकर जी का शक्तिस्थान है। आत्मा और शरीर इन का समन्वय उनको चाहिए।

खांडेकरजी ने अपने जीवनप्रमेय की संरचना कैसी की है यह जानने की आवश्यकता है। कालिदास के 'अभिज्ञानशाकुंतल' का उनपर प्रभाव था। शकुंतला जब ससुराल जाने लगी तब कण्व ऋषि ने उसको शर्मिष्ठा ययाति को अतीव प्रिय हुई वैसेही तुम अपने पति को प्रिय हो। यह आशीर्वाद खांडेकरजी को मान्य नहीं हुआ। कालिदास के ''भर्तुबहुमताभव'' इन शब्दों का अवलोकन करते करते उन्होंने शर्मिष्ठा के भावजीवन की स्वतंत्र प्रज्ञा की संरचना करने का १९१४-१५ संकल्प किया। इसी दीर्घ चिंतन का नवनीत १९५९ में 'ययाति' नामक श्रेष्ठ साहित्यकृति के रूप में मराठी साहित्यजगत को और साथसाथ भारतीय साहित्यसृष्टि को प्राप्त हुई।

खांडेकरजी ने कच-देवयानी के आख्यान का परिशीलन किया। ययाति और देवयानी इन के वैवाहिक जीवन दुखी क्यों हुआ यह मर्मदृष्टि से पहचानने का प्रयास किया। इस पर कलात्म भाष्य किया। देवयानी का सच्चा प्रेम कच के प्रति था। प्रेम का वह पहला आविष्कार था। वह उत्कट आविष्कार था। देवयांनी ने ययाति से विवाह किया वह महत्त्वाकांक्षा से प्रेरित होकर। उसने शर्मिष्ठा को दासी बनाया बदले की भावना मन में रख कर। अहंकारी, महत्त्वाकांक्षी, मन में शलय रख कर जीवन बितानेवाली और प्रेमभंग से टूटी-फुटी स्त्री जैसा वर्ताव करेगी वैसी स्त्री खांडेकरजी ने अपने निर्मितीशील प्रतिभा से देवयानी के रूप में हमारे सामने रखी है।

देवयानी के दुख के लिये वह खुद जिम्मेदार है। नियति का क्रूर नाट्य उस के जीवन में है। पहला विफल प्रेम सहन करने की शक्ति उस में नहीं है। शुक्राचार्य जैसे कोपिष्ट और एकांगी पिता की वह लाडली पुत्री है। पति को पत्नी से प्रेम की आवश्यकता होती है। आर्तता, आर्द्रता, उत्कटता और उदात्तता

की आवश्यकता होती है। देवयानी से ययाति को यह प्रेम, मिलना का संभव नहीं था। शर्मिष्ठा जैसी त्यागी प्रेम मिलना ययाति का महदभाग्य था। उसके निस्सीम प्रेम से ययाति को वह बहुत प्रिय होती है, यह बात अत्यंत स्वाभाविक थी।''शर्मिष्ठा ययाति को बहुत प्रिय हुई।'' कालिदास के वचन की यथार्थता यहाँ ध्यान में आती है।

कच उन्नयशील व्यक्तित्व है। भयग्रस्त जगत में जिस आधुनिक दृष्टि के मानव की अपेक्षा लेख करता है उसी का प्रातिनिधिक रूप है कच। नीति की प्रगति अंतिमत: मानवी मन की विकसनशीलता और आत्मा की विशालता पर निर्भर रहती है। 'ययाति' में यह भावसत्य अधोरेखित हुआ है।

विश्व में आज मूल्यों का अभाव है। आदमी नीतिभ्रष्ट हो चुका है। भौतिक समृद्धि का अवलंब अतिरिक्त भाव से करने में मानव की लगन है। इसी से उसका आत्मिक विकास कुंठित हो चुका है। इस अध:पतन पर भाष्य करनेवाली साहित्यकृति खांडेकरजी ने निर्माण की है।

जोसेफ मॅझिनी का अवतरण खांडेकरजी ने उद्धृत किया है:

Those who have no vision perish.

खांडेकरजी सिर्फ साहित्यिक नहीं है। द्रष्टा के रूप में उन्हों ने अपनी भूमिका बड़ी निष्ठा के साथ निभायी है। उन के प्रगल्भ चिंतनशीलता का 'ययाति' यह नवनीत है।

✦ ✦ ✦